

महामारी कोविड-19 के उपरांत शिक्षा का बदला स्वरूप

ऋषिपाल¹, ज्योति श्योराण², जयपाल मेहरा³, निधि जैन⁴, पल्लवी⁵

¹ प्रोफेसर और डीन एच एंड एस, एसवीएसयू, हरियाणा

²चेयरपर्सन विभाग अंग्रेजी, सीआरएसयू, जींद, हरियाणा

³ एआर एंड पीआरओ, एसवीएसयू, हरियाणा

⁴ सहायक गुरुग्राम विश्वविद्यालय, गुरुग्राम

⁵ सहायक प्रोफेसर, सीआरएसयू, जींद, हरियाणा

सारांश:

महामारी "कोविड -19" के कारण वर्ष 2020 वर्तमान मानव पीढ़ी के इतिहास का सबसे चुनौतीपूर्ण एवं भयावह वर्ष रहा। कोविड -19 महामारी के फैलाव का कारण कोरोना वायरस माना जाता है। यह वायरस पहली बार अन्य प्राणियों से मानव के संपर्क में आया और इसने लोगों को बड़े स्तर पर बीमार करना शुरू कर दिया। मनुष्य का कोविड-19 बीमारी के संपर्क में पहली बार आने के कारण इस बीमारी का उसके पास ना तो कोई टीका व दवा थी एवं ना ही अन्य उपचार था जिससे कि इस बीमारी को नियंत्रित किया जा सके। चिकित्सकों एवं आयुर्विज्ञान विशेषज्ञों को महामारी कोविड-19 के रोगी से निपटने और उसका इलाज करने का कोई अनुभव नहीं नहीं होने के कारण, एहतियात ही इस घातक बीमारी से लोगों को बचाने का एकमात्र उपाय था। इस विकट स्थिति से निपटने के लिए विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यू एच ओ), चिकित्सा विज्ञान की सर्वोच्च संस्था होने के नाते मानवता की रक्षा के लिए आगे आया और इस महामारी से लोगों की सुरक्षा के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश जारी किए। लेकिन सामान्य परिस्थितियों में सामान्य जन के द्वारा डब्ल्यूएचओ द्वारा जारी किए गए दिशानिर्देशों का पालन करना बहुत मुश्किल था क्योंकि डब्ल्यू एच ओ के दिशा-निर्देशों का पालन रोजमर्रा की आवश्यक मानवीय गतिविधियों को बुरी तरह से प्रभावित एवं बाधित करता था। एक तरफ महामारी कोविड-19 से मनुष्य को अपनी जान का खतरा तथा दूसरी तरफ इस बीमारी से बचाव के दिशा-निर्देशों के पालन के कारण जीवन जीने के लिए आवश्यक वस्तुओं एवं सेवाओं को प्राप्त करने के लिए जरूरी गतिविधियों को संपन्न ना कर पाने की स्थिति के कारण मनुष्य का अस्तित्व ही खतरे में पड़ गया। परंतु फिर भी मनुष्य के पास डब्ल्यू एच ओ के दिशा निर्देशों के पालन के अलावा कोई और विकल्प शेष नहीं था। इतना ही नहीं, डब्ल्यू एच ओ के दिशा निर्देशों के पालन ने मानवता को पारस्परिक संपर्क, सामाजिक मेलजोल और दैनिक जीवन की गतिविधियों के संपादन की नई तकनीकों को विकसित करने के लिए मजबूर किया। मनुष्य समाज में उसके बच्चों की शिक्षा को एक अति आवश्यक मानवीय गतिविधियों में सम्मिलित किया जाता है, जिसे न तो टाला जा सकता है और न ही लंबे समय के लिए स्थगित किया जा सकता है।

प्रस्तावना:

कोविड -19 के प्रकोप से पहले, पठन-पाठन की प्रक्रिया का सबसे आसान और सबसे अच्छा तरीका शिक्षकों और छात्रों के बीच आमने-सामने संचार एवं बातचीत के माध्यम से था। लेकिन डब्ल्यूएचओ

के दिशानिर्देशों के अनुसार, कोविड -19 से बच्चों और छात्रों की सुरक्षा के लिए उन्हें छह फीट की सुरक्षित दूरी बनाकर सामाजिक तालमेल का अभ्यास करना था। इन दिशानिर्देशों के कारण पठन-पाठन की प्रक्रिया को संचालित करना संभव

नहीं था अतः उसे स्थगित करना पड़ा। इसके अलावा, डब्ल्यूएचओ के दिशानिर्देशों के अनुसार, शैक्षणिक गतिविधियों के संचालन के लिए मौजूदा बुनियादी ढांचा नियमित कक्षाओं के लिए पर्याप्त एवं उपयुक्त नहीं था। इस नई उत्पन्न हुई चुनौतीपूर्ण, जटिल एवं विरोधाभासी स्थिति में, जहां एक ओर शैक्षणिक गतिविधियों के अनिवार्य संचालन के लिए दबाव था और दूसरी ओर पर्याप्त और उचित बुनियादी ढांचे की अनुपलब्धता थी, सरकार और शैक्षणिक संस्थानों के प्रबंधन ने ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली को चुनौती का सामना करने के लिए एक वैकल्पिक सहायता के रूप में अपनाया। शैक्षणिक संस्थान कोविड-19 महामारी के प्रकोप से पहले भी शिक्षा के ऑनलाइन मोड का उपयोग करते रहे थे, लेकिन ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली की प्रभावशीलता का परीक्षण केवल महामारी की अवधि के दौरान ही हो पाया। ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली की प्रभावशीलता, उपयोगिता और उपयुक्तता का पता लगाने के लिए, एक अध्ययन किया गया। इस शोध अध्ययन के लिए आवश्यक 2000 से अधिक स्नातक एवं स्नातकोत्तर प्रतिभागी छात्र एवं छात्राओं का नमूना, विभिन्न विश्वविद्यालयों, शैक्षणिक संस्थानों एवं प्रशिक्षण केंद्रों से चयन किया गया। डेटा संग्रह की प्रश्नावली विधि का उपयोग गूगल फॉर्म के माध्यम से किया गया। अध्ययन के निष्कर्ष निम्नानुसार हैं:

लॉकडाउन के पहले, दौरान और बाद में इंटरनेट का उपयोग

इंटरनेट पर बिताया गया दैनिक समय	उत्तरदाताओं की संख्या					
	लॉकडाउन से पहले		लॉकडाउन के दौरान		लॉकडाउन के बाद	
	प्रतिभागी	%	प्रतिभागी	%	प्रतिभागी	%
घंटे						
0-1h	470	22.93	181	08.83	375	18.29
1h-2h	840	40.98	410	20.00	556	27.12
2h-5h	542	26.44	835	40.73	702	34.24
5h-7h	125	06.10	435	21.22	215	10.49
7h से अधिक	73	03.56	185	09.02	112	05.46
अन्य	0	0	4	0.19	90	04.39

उपरोक्त तालिका लॉकडाउन से पहले, लॉकडाउन

के दौरान और लॉकडाउन के बाद की अवधि के दौरान 2050 उत्तरदाताओं के इंटरनेट उपयोग समय पैटर्न के तुलनात्मक विश्लेषण को दर्शाती है। इस तालिका में दिए गए आंकड़ों से स्पष्ट है कि तीन अलग-अलग अवधियों के दौरान उत्तरदाताओं द्वारा इंटरनेट पर व्यतीत किए जाने वाले समय में महत्वपूर्ण परिवर्तन होता है। पहले लॉकडाउन के दौरान बिताए गए घंटों के प्रतिशत में तेज वृद्धि हुई है और इसके बाद अनलॉक अवधि के दौरान एक ध्यान देने योग्य गिरावट देखी जा सकती है। यह ऑनलाइन गतिविधियों में वृद्धि और ऑफलाइन से ऑनलाइन मोड में अध्ययन पैटर्न में बदलाव के कारण हो सकता है।

लॉकडाउन से पहले और उसके दौरान ऑनलाइन गतिविधियों में भागीदारी और शिक्षा के ऑनलाइन या ऑफलाइन मोड

ऑनलाइन पाठ्यक्रमों / वेबिनार / बैठकों / कार्यशालाओं में भागीदारी	लॉकडाउन से पहले		लॉकडाउन के दौरान		शिक्षा के ऑनलाइन या ऑफलाइन मोड को प्राथमिकता		
	उत्तरदाताओं की संख्या	%	उत्तरदाताओं की संख्या	%	उत्तरदाताओं की संख्या		%
हाँ	909	43.34	1378	67.22	ऑनलाइन मोड	194	09.46
नहीं	1141	55.66	672	32.78	ऑफलाइन मोड	581	28.34
रुचि नहीं	--	--	--	--	ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों	127	62.20

यह तालिका ऑनलाइन गतिविधियों जैसे की ऑनलाइन पाठ्यक्रम, कार्यशालाओं एवं वेबिनार आदि में प्रतिभागियों की भागीदारी पर लॉकडाउन के प्रभाव का विवरण प्रस्तुत करती है एवं ऑनलाइन तथा ऑफलाइन शिक्षा के लिए उत्तरदाताओं की प्राथमिकता भी। तालिका लॉकडाउन अवधि के दौरान ऑनलाइन पाठ्यक्रम / वेबिनार, कार्यशालाओं आदि में भागीदारी में उल्लेखनीय वृद्धि दर्शाती है।

यह इस तथ्य के कारण हो सकता है कि इस अवधि के दौरान ऑनलाइन मोड एकमात्र विकल्प उपलब्ध था। ऑनलाइन बनाम ऑफ़लाइन शिक्षा परिणामों के लिए उत्तरदाताओं की समग्र वरीयता इंगित करती है कि 62% उत्तरदाता ऑनलाइन और ऑफ़लाइन मोड ऑफ लर्निंग के संतुलित संयोजन को पसंद करते हैं।

लॉकडाउन के दौरान नई ऑनलाइन / डिजिटल कौशल सीखने की प्रवृत्ति

लॉकडाउन के दौरान सीखने वाले नए ऑनलाइन / डिजिटल कौशल	उत्तरदाताओं की संख्या	(%)
हाँ	1365	66.58
नहीं	250	12.20
शायद	340	16.59
पहले से ही सीखा हुआ	77	03.76
प्रौद्योगिकी की जरूरत नहीं	18	0.88

ऊपर दी गई तालिका में लॉकडाउन अवधि के दौरान नए ऑनलाइन / डिजिटल कौशल सीखने के लिए उत्तरदाताओं की प्रवृत्ति को दर्शाया गया है। तालिका में दिए गए डेटा का विश्लेषण लॉकडाउन अवधि के दौरान नए ऑनलाइन / डिजिटल कौशल सीखने के लिए उत्तरदाताओं की प्रवृत्ति में महत्वपूर्ण वृद्धि को इंगित करता है

ऑनलाइन मोड और कोविड -19 के प्रतिकूल प्रभाव और छात्रों के अध्ययन पर इसके बाद लॉकडाउन का उपयोग करके अध्ययन में आराम का स्तर

ऑनलाइन मोड का उपयोग करके अध्ययन में आराम का स्तर	उत्तरदाताओं की संख्या	%	अध्ययन पर कोविड -19/ लॉकडाउन का प्रतिकूल प्रभाव	उत्तरदाताओं की संख्या	%
हाँ	956	46.63	हाँ	1542	75.22
नहीं	551	26.88	नहीं	224	10.93
शायद	517	25.22	शायद	271	13.22
अन्य	26	01.27	अन्य	13	0.63

डिजिटल तकनीक के बारे में जागरूकता और अभ्यास बढ़ने से शिक्षा के ऑनलाइन मोड के उपयोग में उत्तरदाताओं के आराम स्तर में वृद्धि हुई है। यह देखते हुए कि अधिकांश उत्तरदाता डिजिटल तकनीक के बेहतर ज्ञान और अभ्यास के कारण शिक्षा के ऑनलाइन मोड के साथ सहज हो गए हैं। प्रतिभागियों के अध्ययन पर कोविड -19/ लॉकडाउन का प्रतिकूल प्रभाव जानने के लिए भी डेटा एकत्र किया गया था और उत्तरदाताओं के अध्ययन पर कोविड -19 महामारी के प्रभाव और बाद में लॉकडाउन के प्रभाव की जांच के लिए विश्लेषण किया गया, विश्लेषण से पता चलता है कि 75% उत्तरदाताओं का मानना है कि कोविड -19 एवं लॉकडाउन के कारण उनके अध्ययन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है।

छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य और शारीरिक स्वास्थ्य पर डिजिटल प्रौद्योगिकी और ऑनलाइन शिक्षा के बढ़ते उपयोग के प्रभाव एवं ऑनलाइन मोड के माध्यम से अध्ययन जारी रखने के लिए वरीयता

अनलॉक के बाद ऑनलाइन अध्ययन के लिए वरीयता			मानसिक स्वास्थ्य पर डिजिटल प्रौद्योगिकी के प्रतिकूल प्रभाव			शारीरिक स्वास्थ्य पर डिजिटल प्रौद्योगिकी के प्रतिकूल प्रभाव	
उत्तर	उत्तरदाताओं की संख्या	%	उत्तर	उत्तरदाताओं की संख्या	%	उत्तरदाताओं की संख्या	%
हाँ	1064	51.90	हाँ	934	45.56	1081	52.73
नहीं	413	20.15	नहीं	685	33.41	594	28.98
शायद	573	27.95	शायद	431	21.02	375	18.29

शिक्षा के ऑफ़लाइन और ऑनलाइन मोड के बीच उत्तरदाताओं की पसंद की तुलना इंगित करती है कि वे शिक्षा ऑनलाइन मोड को पसंद करते हैं। यह कोविड-19 वैक्सीन विकास पर अनिश्चितता, कोरोना संक्रमण के डर और सामाजिक दूरियों के

मानदंडों के रखरखाव आदि जैसे कारकों के कारण हो सकता है। उपरोक्त तालिका से यह भी पता चलता है कि 52% उत्तरदाता, कोरिड-19 के डर के कारण ऑनलाइन मोड ऑफ लर्निंग पसंद करते हैं। यह शिक्षा के ऑनलाइन मोड के अधिक एवं लगातार उपयोग के कारण छात्रों के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव की वजह बन रहा है। दी गई तालिका व्यक्ति के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य पर डिजिटल प्रौद्योगिकी के बढ़ते उपयोग के प्रभाव को भी दर्शाती है। डेटा स्पष्ट करता है कि शिक्षा के ऑनलाइन मोड पर बिताए गए समय में उत्तरदाताओं के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

निष्कर्ष: अध्ययन संक्षेप निष्कर्षों से पता चलता है कि कोविड -19 लॉकडाउन के दौरान, ऑनलाइन पाठ्यक्रम-कार्य, वेबिनार और शिक्षण सीखने की प्रक्रिया में वृद्धि के कारण ऑनलाइन शिक्षा के लिए डिजिटल प्रौद्योगिकी के उपयोग में वृद्धि हुई है। इस वजह से, छात्रों ने प्रत्येक दिन इंटरनेट पर अधिक समय बिताया। एक तरफ, ऑनलाइन शिक्षा ने घर के आराम के साथ-साथ डिजिटल तकनीक में नए कौशल से अपनी पहचान बढ़ाई है, लेकिन दूसरी ओर इसने उनके मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल प्रभाव डाला है। परिणामस्वरूप, बड़ी संख्या में उत्तरदाता ऑनलाइन तथा ऑफलाइन शिक्षा के संयुक्त उपयोग को पसंद करते हैं। प्रतिभागियों के 62% से भी अधिक प्रतिशत का मानना है कि अध्ययन के ऑनलाइन और ऑफलाइन मोड का एक संतुलित संयोजन आज के संदर्भ में अधिक प्रासंगिक है।